International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-09-2020; Accepted: 05-10-2020; Published: 21-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 126-130

कबीर की मध्यकालीन दृष्टि और स्त्री

राहुल सिद्धार्थ
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

कबीर का समय लगभग 1425 ई. से 1528 ई. के बीच माना जाता है | राजनीतिक दृष्टि से यह काल सैय्यद वंश के सुलतान मुबारक खा से शुरू होकर लोदी वंश के शासक सिकन्दर लोदी तक जाता है | यह काल राजनीतिक अस्थिरता का काल है | सैय्यद वंश केंद्रीकृत राज्य की स्थापना नही कर पाता है | मुबारक खा- मुहम्मद शाह- और अंत में अलाउद्दीन शासक बनता है जो आलमशाह की उपाधि लेता है | सैय्यद वंश का अंतिम शासक अलाउद्दीन दिल्ली की गद्दी छोड़कर संन 1448 बदायूं चला गया और ऐसे ही समय में लोदी वंश की स्थापना होती है | इस समय कबीर की आयु लगभग 48 वर्ष की है |

लोदी वंश में बहलोल लोदी से सिकंदर लोदी तक कबीर का समय निश्चित किया जा सकता है | कबीर की मृत्यु लगभग सन 1518 में होती है और सिकंदर लोदी का शासन काल सन 1517 तक है | बहलोल लोदी को इतिहासकारों ने दयालु व ईमानदार शासक माना है | वह आडम्बर में विश्वास नही रखता था | बहलोल का शासन काल सन 1451 से 1489 तक रहा जो लगभग कबीर की आयु के 80 वर्षों तक का समय है ||

इसके पश्चात सिकन्दर लोदी शासक बनता है | इनका समय सन 1489 से 1517 तक है यानी की कबीर की मृत्यु तक | यह वही सिकन्दर शाह है जिसने आगरे शहर की स्थापना की | इसने एक मजबूत शासन की नींव रखी| यह धार्मिक रूप से कट्टर शासक था | इसने मथुरा के मदिर को तोड़ने की आज्ञा दी और टूटी हुई मूर्तियों से मांस तौलने का कार्य किया जाने लगा |

इस राजनीतिक स्थिति के सन्दर्भ में किसी आलोचक ने यह तय नहीं किया की कबीर की साखी,रमैनी ,सबद के रचनाकाल क्या हैं ? हाँ, कट्टरता के धरातल पर सिकन्दर लोदी का नाम लिया जाना स्वाभाविक है | इतना स्वाभाविक है कि मुस्लिमों की सत्ता के बाद संघर्ष के रूप बदल गए | इतना अवश्य है कि पहले जिस हिन्दू धर्म को बौद्ध ,जैन के खिलाफ संघर्ष करना पड़ा उसके सामने एक अलग धर्म की चुनौती थी | यह चुनौती इस्लाम के रूप में थी |

कबीर कालीन धर्म के सम्बन्ध में डॉ नजीर मुहम्मद लिखते हैं कि कबीर काव्य की धार्मिक पृष्ठभूमि उस वृहत धारा का संयुक्त इतिहास है जिसमें वैदिक और पौराणिक चेतनाओं के साथ बौद्ध, सिद्ध, नाथ, सूफी आदि मत-मतान्तरों के साथ भक्ति आन्दोलन में सम्मिलित हैं |

कबीर की भक्ति और नाथ सम्प्रदाय

सिद्धों ने बौद्ध धर्म के वज्रयान तत्व के प्रचार करने के उद्देश्य से जिस साहित्य की रचना जनभाषा में की वह हिन्दी साहित्य में 'सिद्ध साहित्य' के नाम से जाना जाता है | सिद्धों में सबसे प्राचीन 'सरह'(सरोजवज्र) को माना जाता है जिनका काल डॉ.विनयतोष भट्टाचार्य ने विक्रम संवत 690 निश्चित किया है | इनकी रचना में अंतस्साधना की प्रधानता तथा बाह्याडम्बरों की निंदा के स्वर मिलते हैं |

यहाँ कामनाओं के उपभोग के लिए स्त्री की आवश्यकता है | जब कण्हपा कहते है कि तंत्र-मन्त्र करना बेकार है,केवल अपनी घरनी को लेकर मौज करो तो उनका आशय इसी अवधूती के साथ विहार करने से है—

एक्क न किज्जइ मंत न तंत
णिअ घरनी लेइ केलि करंत |
णिअ घर घरणी जाव ण मज्जइ
ताव कि पंचवण्ण विहरिज्जइ|| [1]

इन्होंने स्त्री को उद्धारक के रूप में भी देखा है तथा जैसी की मान्यता है कि विष से मुक्ति विष के सेवन से ही संभव है तो उसी सन्दर्भ में तिलोपा ने भी कहा कि संसार-रूपी विष से निवृत्ति पाने के लिए स्त्री रुपी विष की ही आवश्यकता है---

जिम विस भक्खइ विसहि पलुत्ता |
तिम भव भुंञ्जइ भवहि न जुत्ता || [2]

इसीलिए सामान्य गृहस्थ जीवन , जीवन की स्वाभाविक प्रवृत्तियों के माध्यम से निर्वाण प्राप्त करने की भावना सिद्ध-साहित्य में देखने को मिलती है| जीवन की स्वाभाविक प्रवृत्तियों में विश्वास रखने के कारण ही सिद्धों का सिद्धांत 'सहज-मार्ग' कहलाता है|

इसप्रकार सिद्ध साहित्य को नाथ साहित्य की पूर्ववर्ती परम्परा के रूप में देखा जा सकता है जिसका प्रभाव संत साहित्य पर स्पष्ट रूप से द्रष्टव्य है | संत साहित्य में जब सभी प्रकार के बाह्याडम्बरों की बात होती है तो उसकी पूर्वपीठिका में सिद्ध साहित्य की समृद्ध भूमिका है |

सिद्ध साहित्य की निर्भीकता, अक्खड़पन, जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण तथा लोक को साथ लेकर चलने की भावना ही वे मूल आधार है जिसपर संत साहित्य आकार ग्रहण करता है | सिद्ध परम्परा को नाथ से जोड़कर देखा जाना भी आवश्यक है | नाथपंथियों की 'बानियों' का मध्यकालीन संतों के 'साखियों' पर भी पड़ा| संत साहित्य को आधारभूमि प्रदान करने का कार्य मूलतः नाथपंथियों द्वारा ही होता है | इस सम्बन्ध में श्री सिद्धनाथ तिवारी ने लिखा है, " कबीर,दादू आदि संत इन्हीं योगियों की परम्परा में दिखाई पड़ते हैं और अपनी बहुत सी मान्यताओं को उसी टकसाल से निकालते हैं जिससे योगियों ने निकालकर अपने बाजार में चलाया था |"[3]

संसार में जो प्रिय है वही तृष्णा के कारण हैं| मन के विषय प्रियकर हैं,इन्हीं से तृष्णा उत्पन्न होती है और अपना घर बनाती है | कबीर ने नारी को बुराई के रूप में देखा तथा उनकी छाया से भी बचने का उपदेश दिया-

जहाँ जराई कामिनी,तू जानि जाइ कबीर|
उड़ि के धूलि जो लागसी. मैला होई सरीर ||[4]

कबीर उन सिद्धों और नाथों द्वारा प्रवर्तित मार्ग को ग्रहण नही करते | यह परेशानी हिन्दी आलोचना की है | इसे नए तरीके से देखने की आवश्यकता है | कबीर एक तरफ तो इस सांसारिक नियमों को मानने की बात करते हैं, गृहस्थ बनने की बात करते है, सन्यासी नहीं बनने की बात करते है और दूसरी तरफ स्त्री की निंदा भी

करते हैं | निंदा इसलिए की वो सिद्धी के मार्ग में बाधक है | लेकिन यही स्त्री सिद्धों के लिए साधना प्राप्ती के साधन हैं |

प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि स्त्री के प्रति यह व्याख्या कबीर की है या हिन्दी साहित्य के आलोचना की समस्या है | मुझे लगता है यह कबीर के माध्यम से कही गई बातों पर ध्यान नहीं दिया जाना है | कबीर की अन्य सामाजिक प्रतिबद्धताओं के सामने स्त्री विषयक उनकी सोच को महत्वपूर्ण नही माना गया | आज के समय में कबीर की स्त्री संबंधी दृष्टि को लेकर बात किया जाना आवश्यक है |

यहाँ, सिद्ध और नाथ साहित्य की इस पृष्ठभूमि में कबीर के नारी संबंधी साखी को देखना महत्वपूर्ण होगा | इन साखियों में कबीर द्वारा प्रतिपादित नारी सबंधी द्रष्टि पर विचार एक नए आयाम को प्रस्तुत करेगा |

दसवीं और 12 वीं सदी में बौद्ध धर्म का प्रभाव कम होता जा रहा था | ऐसे ही समय में बौद्ध धर्म में तांत्रिक साधना पद्धति को शामिल किया जाता है | शाक्त और कापालिकों का स्पष्ट प्रभाव इस समय दिखाई पड़ता है | अनेक प्रकार की साधनाओं की पद्धति ने साधना ने क्रम में अवांछित तौर-तरीकों को शामिल किया| ऐसे ही समय में गोरखनाथ के द्वारा साधना की विकृत पद्धतियों का विरोध किया गया |

कबीर के सिद्धांत की समानता नाथ पंथ से होने के कारण यह जिज्ञासा का कारण स्वाभाविक रूप से बनता है | पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नाथ पंथ और कबीर के सिद्धांत की संकल्पना को दृढ़ता से रखा है |

कबीर के दर्शन पर बौद्ध धर्म के दर्शन का प्रभाव देखने को मिलता है | हिन्दी के आलोचकों ने अभी तक कबीर के दोहों और साखियों की विवेचना सिद्ध एवं नाथ सम्प्रदाय के सिद्धांतों के आधार पर ही की है | प्राय: आलोचकों का मत है कि कबीर पर नाथ सम्प्रदाय के प्रभाव के फलस्वरूप ही उलटबांसियों में गूढ़परक्(mysterious) अर्थों की अभिव्यंजना मिलती है | नाथ-सिद्धों की परम्परा में नारी के साहचर्य द्वारा ही साधना की प्राप्ति की बात कही गई है | सिद्धों ने नारी को त्याज्य नही माना है | सिद्धों में नारी के संयोग से ही सिद्धी की प्राप्ति होती है| इस रूप में यह सिद्ध ,शिव के बेहद करीब है | वही शिव जो अर्धनारीश्वर है | वही शिव जो गोरखनाथ के आदि गुरु माने जाते हैं|

अब प्रश्न उपस्थित होता है की यदि कबीर पर सिद्ध-नाथ का प्रभाव है तो फिर वे स्त्री को मोक्ष प्राप्ति में बाधक कैसे मानते हैं?

स्पष्ट है कि यह कबीर का नारी के प्रति मौलिक चिंतन है जिसमें वे नारी को मोक्ष के मार्ग में बाधक मानते हैं | यह कबीर के चिंतन का द्वैत है | विरोधाभास (paradox)है | एक तरफ कबीर कहते है गृहस्थ धर्म आवश्यक है | इस धर्म का पालन करते हुए ही मोक्ष(salvation) की प्राप्ति हो सकती है | दूसरी तरफ वे कहते हैं स्त्री मोक्ष प्राप्ति में बाधक है | यद्यपि वे किसी भी प्रकार के बाह्याडम्बर को नही मानते |

यह ज्ञात है कि कबीर द्वारा अभिव्यक्त कथ्य किसी पुस्तकों के सिद्धांत के आधार पर नहीं गढ़े गए इसीलिए उनके द्वारा व्यक्त साखियों की व्याख्या भी किसी एक सिद्धांत को आधार बनाकर नही की जा सकती | कबीर तो खुद कहते हैं-

तू कहता कागद की लिखी ,मैं कहता आंखन की देखी |

पुन: प्रश्न उपस्थित होता है की यदि कबीर पर सिद्ध-नाथों का प्रभाव है तो आवश्यक रूप से उनपर तंत्र साहित्य का भी प्रभाव होना चाहिए था |लेकिन कबीर तो सभी प्रकार के तंत्र –मन्त्र और बाह्याडम्बर का विरोध करते हैं | इस धरातल पर यह स्पष्ट है की कबीर द्वारा बाह्याडम्बर का विरोध किया जाना उनकी मौलिक सोच का परिणाम है न कि तंत्रयान या सहजयान का प्रभाव | इसी रूप में उनके नारी संबंधी विचार को भी देखा जाना चाहिए |

यह ज्ञात है की कबीर की साखी , सबद , रमैनी किसी एक भाषा में नहीं है | द्विवेदी जी ने उनकी भाषा को पंचमेल खिचड़ी कहा है | प्रकारान्तर से इसका अर्थ है की कबीर भ्रमण करते हुए अपने विचार व्यक्त किए इसीलिए विविध क्षेत्रों की भाषा उनके साहित्य के अंग बनते हैं |इसी रूप में कबीर पर अन्य दार्शनिक विचारों का भी प्रभाव पडा है | जब वे पूर्व में है तो निश्चित रूप से वे नाथ-सिद्ध से प्रभावित हैं | इसे इस रूप में ही देखा जाना चाहिए |

इस विभिन्न परम्पराओं वाले देश में कबीर शैव,वैष्णव,सिद्ध,नाथ सब से कुछ न कुछ लेकर आगे बढ़ते हैं और उसमें आंचलिकता के रंग को भरते हैं | इन सबके बीच स्त्री संबंधी चिंतन भी उनका मौलिक चिंतन ही है | उनके स्त्री संबंधी विचार के सम्बन्ध में हिन्दी आलोचक मौन हैं | आज 21 वीं शताब्दी में कबीर के टेक्स्ट को केवल सिद्ध-नाथों के सिद्धांतों के आलोक में ही नही पढ़ा जाना चाहिए |

आज तो बौद्ध धर्म पर बात करते हुए संघ में भिक्षुणियों की स्थिति पर बात की जा रही है |

बौद्ध धर्म में पुरुष के साथ-साथ महिलाओं को भी निर्वाण प्राप्ति का अधिकार है | थेरीगाथा में स्त्री स्वर को महत्व प्रदान किया गया है | थेरीगाथा में स्त्रियों को भी पुरूष के समान माना गया तथा इस बात पर बल दिया गया कि स्त्री भी आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति पुरूष के समान कर सकते हैं |

इन सभी तथ्यों को देखने से यह स्पष्ट होता है की कबीर द्वारा प्रतिपादित नारी संबंधी विचार उनके ही चिंतन का प्रमाण है | ऐसे ही विचार मध्यकालीन समाज में स्त्रियों के लिए विद्यमान थे | स्त्रियों को समाज में न तो संपत्ति में अधिकार है और परिवार में उसकी भूमिका निम्न स्तर की है | कबीर भी पारंपरिक विचार को ही प्रस्तावित करते है | यह कबीर की अपनी सीमा है |

कबीर द्वारा प्रतिपादित स्त्री संबंधी विचार से पूर्व आंडाल, अक्कमहादेवी, लाल्दद्य के स्त्री सबंधी विचार को देखना भी महत्वपूर्ण होगा | ये तीनों भक्त कवयित्री स्त्री को समाज में एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में देखती हैं और उनके व्यक्तित्व को स्थापित करती हैं |

आंदाल: यह 8 वीं शताब्दी की भक्त कवयित्री हैं जो शैव धर्म की अनुयायी हैं | दक्षिण भारत के 12 आलवार संतों में ये केवल अकेली महिला आलवार भक्त कवि है | इनकी दो साहित्यक रचनाएं है – थिरुपव्वाई (कृष्ण के रास्ते) और नाचियार थिरुमोझी(महिला का पवित्र संगीत) | अपनी कविताओं में उन्होंने स्त्री की इच्छा को 9 वीं शताब्दी में स्वतंत्र अभिव्यक्ति दी है | 15 वीं शताब्दी में भी कबीर की स्त्री के पास यह सहूलियत नहीं है |

वह लिखती हैं -
मेरा जीवन धन्य हो जाएगा जब मेरा प्रियतम मेरे पास होगा,
उसी के सानिध्य में मैं अपने आप को सार्थक मानूँगी,
और जब उसका प्रस्तान होगा तो
उसके सानिध्य की अनुभूति मुझे वैसी ही
सार्थकता देगी जैसे कि
एक फूल और पराग का सम्बन्ध होता है |[5]
(अंग्रेजी से अनुवाद)

अक्कमहादेवी (कर्नाटक) 12 वीं शताब्दी: इन्होने बहुत से दार्शनिक संवादों में भागीदारी की और प्रभुद्वत्व को प्राप्त किया | इन्होने माना कि इनके पति मल्लिकार्जुन है | बाद में किसी राजा के साथ इनकी शादी बलपूर्वक कर दी जाती है लेकिन वे उन्हें छोड़ देती है | इनका नाम स्त्री विमर्श के क्षेत्र में सम्मान से लिया जाता है |

वे लिखती हैं –
गांव में भूखों के लिए भोजन की व्यस्था है,
प्यासों के लिए तालाब,झरने और कुएँ हैं.
लेकिन मेरी आत्मा के साथी केवल आप ही हो चेन्ना मल्लिकार्जुन |6
(अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद)
लल्दद्य (काश्मीर): 14 वीं शताब्दी

ऐसा माना जाता है कि लाल्दाद्य का जन्म 1355 ई. में होता है तथा 12 वर्ष की आयु में इनकी शादी कर दी जाती है लेकिन अपनी शादी से नाखुश होकर ये घर छोड़ देती हैं | 14 वीं शताब्दी में भी इन्होने पितृसत्ता के विरुद्ध आवाज उठाई | ये भी शैव भक्त थीं

ये तीनों भक्त कवयित्री कबीर की पूर्ववर्ती हैं जिन्होंने एक परम्परागत व्यवस्था के विरुद्द्ध आवाज उठाई लेकिन कबीर इससे अनभिज्ञ है |

कबीर और उनकी साखी में प्रतिपादित स्त्री

कबीर स्त्री को माया मानते है तथा उनका विचार है कि स्त्री ही ईश्वर एवं भगवान के बीच में बाधक है | ऐसा कहते हुए वे पूरी तरह स्त्री के अस्तित्व को नकारते हैं | कबीर माया का सम्बन्ध चालाक बुरी स्त्री से मानते हैं जो अपनी चाल से पुरूषों को वश में करता है | इसप्रकार वे सभी बुरे कर्मों के लिए जिम्मेदार स्त्री को ही मानते हैं |

कबीर माया बेसवा, दोनु की एकजात |
आबत को आदर करे, जात ना पूछे बात ||

कबीर की मान्यता है कि एक साधक स्त्री के रूप में ही अपने ईश्वर को प्राप्त करता है और वे कहते हैं -

हरी मेरा पीव मैं हरि की बहुरिया

यह कबीर का द्वैत है | सूफी दर्शन में तो ईश्वर पति के रूप में चित्रित है इसप्रकार कबीर पर सिद्ध-नाथ के साथ सूफी दर्शन का भी प्रभाव दिखता है | मध्यकालीन समाज में कबीर की सोच भी स्त्री के प्रति मध्यकालीन मानसिकता से ही ग्रस्त है | पितृसत्तात्मक व्यवस्था से जकड़ी हुई स्त्रियों को कबीर के पास भी मुक्ति नही है | सभ्यता की शुरुआत से ही स्त्रियों ने पुरूषों का साथ घर से लेकर बाहर दिया है | लेकिन कबीर मानवीयता के धरातल पर भी अपनी साखियों में उनका साथ नही देते हैं | कबीर की साखियों में स्त्री संबंधी दृष्टि पर आगे कुछ उदाहरणों के माध्यम से देखेंगे जिसमें स्त्री के सन्दर्भ में जेंडर की अवधारणा और समतापरक समाज की कल्पना पूर्णतः अनुपस्थित है |

यहाँ में कहना चाहूंगा की कबीर का समाज १५ वीं सदी का समाज है लेकिन सामाजिक संरचना में पितृसत्तामक सतात्मक व्यवस्था ज्यों की त्यों बनी रहती है | कबीर जैसे समाजसुधारक भी मुखर होकर इस व्यवस्था को मजबूती ही प्रदान करते हैं | कबीर इसका विरोध नही करते हैं |

यह आश्चर्यजनक है कि कबीर जिस मानवतावाद या सामाजिक समरसता की बात करते हैं एवं एक आदर्श समतामूलक समाज की स्थापना की बात करते है वहा समाज की प्राथमिक इकाई 'परिवार' ही विभाजित है | एक ही परिवार में रहनेवाले पुरूष और स्त्री में समता नहीं है | फिर एक समतामूलक समाज की स्थापना कैसे हो सकती है ! क्योकि कबीर पूर्णतः स्त्री के व्यक्तित्व को नकारते हैं |

कबीर अपनी साखियों में स्त्री के लिए डाकिनी, पापिनी,मोहिनी, सर्प आदि आदि शब्दों का प्रयोग लगातार करते हैं | आगे वे कहते है कि स्त्री से वे नफरत इसीलिए करते हैं कि वे ही पुरूषों को अपनी और आकर्षित करती है | अतः स्त्री ईश्वर के साक्षात्कार में बाधक है |

ऐसा लगता है कि यह किसी भक्त कवि का विचार न हो बल्कि एक सामंत का विचार हो जो अपने अनुसार समाज को परिभाषित कर रहा हो | कबीर स्पष्ट रूप में एक पुरूषवादी/ पितृसत्तामक समाज की स्थापना करते है और स्त्री को हीन समझते हैं |

नागिन के तो दोए फेन, नारी के फन बीस |
जाका डासा न फिर जीए, मरि हैं बिसवा बीस |

तो फिर क्या कबीर का भगवान चाहे वो सगुन/निर्गुण हो अर्धनारीश्वर नहीं है ? जबकि यह ज्ञात है कि नाथ सम्प्रदाय के आदि गुरू 'शिव' माने जाते हैं जो खुद अर्धनारीश्वर हैं| फिर यह तो हमें निश्चित तौर पर मान लेना होगा कि कबीर पूर्णत: नाथों का अनुसरण नही करते| स्त्री संबंधी विचार उनका मौलिक चिंतन का ही प्रतिफलन है क्योकि बहुरिया के माध्यम से हरि को प्राप्त करने की चाह है फिर भी बहुरिया डाकिनी/ पापिनी है |

कबीर १५ वीं शताब्दी के संत हैं | हमने १५ वीं शताब्दी के राजनीतिक स्थिति को देखा है | मुस्लिमों के आक्रमण तो पूर्व में ही शुरू हो चुके थे | कबीर के समय में अप्रत्याशित रूप से ऐसी कोई घटना नही घटती जिसके कारण उन्हें स्त्री के सम्बन्ध में ऐसे विचार प्रकट करने पड़े हों –

नारी काली उजली, निक बिभासी जोये|
सभी डरे फंद में, नीच लिये सब कोये|

यह महत्वपूर्ण है कि कबीर एक तरफ समाज की बुराई में जातिगत एवं धार्मिक विद्वेष की भावना को देखते हैं | और दूसरी तरफ ईश्वर से दूर होने के लिए स्त्री को ही कारण के रूप में देखते हैं | स्त्री के सन्दर्भ में समाज की परम्परागत मान्यताओं से कबीर भी अलग तरह से नही सोचते हैं | समाज में स्त्री के प्रति चली आ रही व्यवस्था में वे पूर्णतः विश्वास व्यक्त करते हैं |

कबीर स्त्री को दो श्रेणी -अच्छी स्त्री और बुरी स्त्री में विभक्त करते हैं | उनके अनुसार अच्छी स्त्री वे हैं जो पूर्णतः अपने परिवार के प्रति समर्पित है जिसमे पति,माँ-पिता,भाई,पति की बहने शामिल है |लेकिन उस स्त्री का अपना कोई अस्तित्व नहीं है | महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में कोई स्थान नही है |वही महिलाएं श्रेष्ट हैं जो पर्दा में रहती है | कबीर तो यहाँ तक कहते हैं कि पत्नी को उसी प्रकार रहना चाहिए जैसे उसका पति रखे | पत्नी को अपने पति के प्रति पूर्णतः समर्पण कर देना चाहिए | दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि कबीर जैसे समाजसुधारक स्त्री की दुनिया केवल पति तक ही सीमित है | कबीर कहते हैं कि ऐसी स्त्रियाँ ही सम्मान एवं सुरक्षा की अधिकारी हैं | कबीर पूर्ण रूप से एक आश्रित पत्नी का समर्थन करते हैं जो पूर्णत पति पर आश्रित हो | पत्नी को स्वीकार और अस्वीकर् करने का अधिकार केवल पति को है | इसप्रकार, कबीर किसी अन्य ब्रम्ह की भी बात करते हो लेकिन स्त्री के लिए तो कबीर की दृष्टि में उनका ब्रम्ह पति ही है | पत्नी केवल पति के सामने हँस सकती और किसी से बात भी नही कर सकती|

कबीर प्रीतड़ी तौ तुझ सौं बहु गुणियाल कंत |
जे हँसी बोलों और सौं, तो नील रंगाऊं दंत |7

वे स्त्रियाँ जो अपने-आपको सम्मान की दृष्टि से देखती है कबीर के अनुसार वे त्याज्य हैं | वे स्त्रियाँ जो अपनी सुन्दरता से पुरूषों को अपनी ओर आकर्षित करते है ,वे त्याज्य हैं | वे माया के सामान है इसीलिए उनकी तुलना जहरीले सर्प से की गई | कबीर ऐसी औरत की तरफ देखना भी अच्छा नहीं मानते हैं | वे पुरूष जो ऐसी स्त्रियों की तरफ आकर्षित होते हैं उनका अंत खराब ही होता है | इसप्रकार कबीर स्त्री और पुरूष के बीच ऐसी खाई उत्पन्न करते हैं जिसको हमारा समाज

आज तक पाट नही पाया | कबीर की आलोचना के केंद्र में स्त्रियाँ भी हैं | वे जहाँ पुरूष की आलोचना करते है उसका कारण भी स्त्री ही है | ऐसी स्थिति में कबीर किस बेहतर समाज की कल्पना करते हैं यह समझ से बाहर है | शायद कबीर एक ऐसे बेहतर समाज की कल्पना करते हैं जिसमें स्त्री अनुपस्थित है |

कबीर माया पापिनी, हरि सो करे हराम |
मुख कदियाली,कुबुधि की, कहा न देयी राम |

आप और हम सोच सकते हैं कि १५ वीं शताब्दी के समाज पर संत द्वारा कही गई इन उक्तियों का क्या प्रभाव पडा होगा | इस प्रकार की उक्तियों ने पुरूष-स्त्री के बीच एक खाई का निर्माण किया होगा | तत्कालीन समय में स्त्री के प्रति ऐसे विचार ने स्त्री की स्थिति को समाज और परिवार में निम्न ही की होगी |

सभी स्त्री कबीर की नजर में एक जैसी ही हैं -
छोटी मोटी कामिनी, सबही विष की बेल|
बैरी मारे दाव से , यह मारै हँसी खेल

नारी निरखि ना देखिये, निरखि ना कीजिये दौर |
देखत ही ते बिस चढ़े, मन आये कछु और |

कामिनी सुन्दर सर्पिणी, जो छेरें तिहि खाये|
जो हरिचरन राखिया, तिनके निकट न जाये|
कबीर कहते हैं -
नारी सेती नेह, बुधि विवेक सबही हरे|
काई गमावै देह, कारिज कोई नाँ सरे |8

स्त्री के संपर्क में आने से ही पुरूष के सभी प्रकार के गुण खत्म हो जाते इसप्रकार , मध्यकालीन समाज में कबीर स्त्री को बेहद प्रस्तुत करते हैं | यह उपहासास्पद है कि जिस मध्यकाल में समाज में भक्ति की प्रधानता है वहाँ कबीर की स्त्री 'काम' के रूप में चित्रित हैं | कबीर की स्त्री बिना किसी अस्तित्व के हैं| वह बिलकुल निरीह है | कबीर की स्त्री सभी प्रकार की बुराइयों की जड़ है | भक्तिकालीन समाज में कबीर की स्त्री को घर से बाहर पैर रखने की इजाजत नही है | इसीलिए कबीर की स्त्री पापिनी है,सांप है और समस्त बुराइयों की खान है |

कपास बिनुथा कापड़ा, कादे सुरंग ना पाए |
कबीर त्यागो ज्ञान करि,कनक कामिनी दोए |
यदि ज्ञान चाहिए तो स्त्री एवं सोना दोनों ही त्याज्य है |

मीरा

मीरा का समय 1498 ई. से 1546 ई. के बीच माना जाता है | मीरा कृष्ण भक्त कवयित्री है | मीरा ने 16 वीं शताब्दी के समाज में पितृसतात्मक व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाई |

कबीर मध्यकाल में "मैं कहता आंखन की देखी" की बात करते हैं | वे किसी मठ में रहकर उपदेश नही देते हैं | कबीर तो संत हैं| फक्कड़ हैं| वे गाँव-गाँव घूमकर उपदेश देते है | हम कल्पना कर सकते हैं कि कबीर १५ वीं शताब्दी में 'स्त्री' के जिस रूप को समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हैं वह उसका स्वस्थ रूप नहीं है | कबीर स्त्री की छवि को पूरी पितृसत्तात्मक सोच के सांचे में ही प्रस्तुत करते हैं |

यह विस्मय की बात है कि राजनीतिक दृष्टि से दिल्ली सल्तनत में रजिया सुल्तान(लगभग 13 वीं शताब्दी) पहली महिला शासक बनती है | यह पुरूष वर्चस्व के खिलाफ आवाज है | कबीर नाथ-सिद्ध से तो प्रभावित होते हैं लेकिन न तो भक्त कवयित्रियों से प्रभावित हो पाते न ही रजिया जैसी सुलतान ही उन्हें प्रभावित कर पाती है |

प्रश्न उठता है कि एक तरफ आलोचकों ने कबीर की व्याख्या सिद्ध-नाथ की परम्परा में की है | यह स्पष्ट है कि नाथों के आदि गुरु शिव हैं | सिद्ध कही भी स्त्री को छोड़ने की बात नही करते | बल्कि स्त्री के माध्यम से ही मोक्ष प्राप्ति की बात कहते हैं | तो दूसरी तरफ कबीर स्त्री निहित बुराइयों के कारण उसे केवल नकारते हैं | उसके अस्तित्व को प्रश्नचिन्हित करते हैं | अतः इस बिंदु पर कबीर सिद्ध-नाथ परम्परा से पूर्णतः अलग हैं |

कबीर ने किसी एक स्थान पर रहकर ग्रन्थ की रचना की | यह कबीर की विशिष्टता है जो विशिष्ट अध्ययन की अपेक्षा रखती है | कबीर का अध्ययन उसके पाठ के आधार पर ही संभव है | कबीर का अध्ययन महज एक संप्रदाय के आधार पर करते हुए उनके पाठ की व्याख्या असंभव है | आज कबीर के स्त्रीपरक पाठ का अध्ययन केवल सिद्ध-नाथ की परम्परा में नही कर सकते| कबीर के स्त्री पाठ पितृसत्तात्मक पृष्ठभूमि में पढ़ा जाना आवश्यक है |

इस सम्बन्ध में यह कहना उचित प्रतीत होता है कि जिसप्रकार कबीर की भाषा को 'पंचमेल खिचडी' कहा जाता है उसी प्रकार उनके पाठ परक दृष्टि को भी अनेक दर्शनों के प्रभाव में ही देखा जाना आवश्यक होगा| |

एक तरफ कबीर ईश्वर प्राप्ति के लिए अपने-आपको स्त्री के रूप में देखते हैं दूसरी तरफ सभी बूराई भी उसमें देखते है| इसलीए वे स्त्री के अस्तित्व को ही नकारते हैं | कबीर के चिंतन के इस विरोधाभास को भी देखा जाना आवश्यक है |

कुलमिलाकर कहना उचित होगा कि संत कबीर १५ वीं शताब्दी के समाज में स्त्री के प्रति पितृसत्तात्मक सोच को ही अभिव्यक्त करते हैं |यह कबीर की स्त्री के सम्बन्ध में उनकी सीमाएं हैं | इसके साथ ही यह हिन्दी आलोचना की भी सीमा है कि अबतक जितने भी कार्य कबीर को लेकर हुए उसमें स्त्री विषयक विषय लगभग गौण ही रहे | यह अपने आप आप में रोचक है कि कबीर के स्त्री विषयक दृष्टि पर आलोचक अब तक मौन क्यों हैं ?

अतः जितनी समस्या कबीर के स्त्री संबंधी चिंतन को लेकर है उससे बड़ी समस्या हिन्दी आलोचना के विवेचन पक्ष को लेकर भी है |

मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पद्मावत' की रचना 1520 ई. से 1540 ई. के बीच की| यह रचना भी भारतीय स्त्री की अस्मिता को पूरी प्रतिबद्धता के साथ प्रस्तुत करती है जो सम्मान और समास का पर्याय है | जन अलाउद्दीन खिजली चित्तौड़ दुर्ग को विजित करता है तब वहाँ की सभी स्त्रियाँ जौहर का व्रत लेती हैं | जायसी लिखते हैं -

" जौहर भई सब इस्तरी , पुरूष भए संग्राम |9
बादशाह गढ़ चूरा, चितउर भा इसलाम ||

यह भी भारतीय स्त्री का दूसरा पक्ष है जिसे संत कबीर पूर्णत: नकारते हैं | इसी प्रक्रिया में संत कबीर अंदाल, लल्दद्य,अक्कमहादेवी, मीरा आदि सभी भक्त कवयित्री को एक तरह से विस्मृत करते हैं जबकि अपने ऊपर सिद्ध-नाथ के प्रभाव से प्रभावित होकर अनेक सामजिक कुरीतियों का बहिष्कार करते हैं | यह मानना होगा कि 15 वीं शताब्दी के समाज को कबीर ने अपनी चिन्तन से राह तो दिखाई लेकिन उसका एक स्याह पक्ष भी है जो उनके द्वारा स्त्री संबंधी विचारों में प्रतिपादित होता है | यदि माया को निकृष्टतम रूप में चित्रित किया जाना था तो स्त्री के साथ उसकी तुलना एक स्वस्थ सन्देश को समाज में प्रेषित नहीं करता है |

सन्दर्भ सूची

1. द्विवेदी, मुकुंद (सं.). हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली,भाग-6,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. वर्मा, रामकुमार, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास,किताब महल,इलाहाबाद
3. तिवारी, सिद्धनाथ, निर्गुण काव्य दर्शन, पटना, पृष्ठ 64
4. दास, श्यामसुन्दर, कबीर ग्रंथावली, इन्डियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, पृष्ठ 22

5. en.wikipedia.org/wiki/Andal (Seen on 14th October 2020)
6. en.wikipedia.org/wiki/ Akka_Mahadevi(Seen on 14th October 2020)
7. दास, श्यामसुन्दर, कबीर ग्रंथावली, इन्डियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, पृष्ठ 18
8. वहीं, पृष्ठ 39
9. शुक्ल, रामचंद्र(सं.) जायसी ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 340